मेरी भाषा की कक्षा

विजय प्रकाश जैन

विजय प्रकाश जैन इस लेख में भाषा शिक्षण के अपने अध्यापकीय अनुभवों को साझा करते हैं। कक्षा में बागड़ी भाषा और हिन्दी, दोनों के साथ काम करने के उनके अनुभव दर्शाते हैं कि दो भाषाओं में एक साथ काम कैसे किया जा सकता है साथ ही यह भी कि कक्षा में मानक भाषा और स्थानीय भाषा दोनों का एक साथ प्रयोग करना संभव है। लेख उन बिन्दुओं को भी उभारता है कि दोनों भाषाओं का साथ-साथ प्रयोग कैसे सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के अन्य पहलुओं, शिक्षक के साथ सहजता, सीखने की ललक, सीखने वाले में आत्मविश्वास आदि को भी प्रभावित करता है। सं.

राष्ट्रीय पाठचर्या की रूपरेखा 2005 में वर्णित है कि प्राथमिक कक्षाओं में भाषा शिक्षण जितना चुनौतीपूर्ण कार्य होता है उससे कहीं ज़्यादा रोचक अनुभव प्रदान करने वाला होता है। शुरुआती दिनों में जब बच्चा अपने घर से स्कूल आता है तो उसका साक्षात्कार स्कूल की उस भाषा से होता है जो उसके घर की भाषा से कई अर्थों में भिन्न होती है। भाषा के शिक्षक के लिए यह एक बड़ी चुनौती होती है कि स्थानीय भाषा-जो बच्चे के घर और पड़ौस की भाषा हो सकती है- को उचित सम्मान देते हुए वह कैसे विद्यालय की भाषा का परिचय बच्चों के साथ कराता है।

मैं जिस स्कूल में शिक्षण करता हूँ वह ऐसे भाषाई क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता है जहाँ हिन्दी बच्चों की दूसरी भाषा है। बागड़ी बच्चों की मातृ भाषा है और अंग्रेजी तीसरी भाषा के रूप में देखी जा सकती है। बागड़ अंचल के दूरस्थ क्षेत्रों के बच्चों का परिवेश शहर और विकसित कस्बे के आस पास रहने वाले बच्चों से भिन्न है। ऐसे भाषाई परिवेश में बच्चों को हिन्दी सिखाना लगभग उतना ही चुनौतीपूर्ण है जितना कि अंग्रेजी या अन्य कोई भाषा सिखाना।

बाँसवाड़ा, राजस्थान का आदिवासी बहुल जिला है। राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, मेन्दिया डिण्डोर, जिला मुख्यालय से 28 किलोमीटर दूर एक ऐसे गाँव में स्थित है जहाँ शत-प्रतिशत भील जनजाति समुदाय के लोग निवास करते हैं। खेती-बाड़ी व मज़दूरी करने वाले परिवारों में एक भी व्यक्ति दसवीं कक्षा पास नहीं है। विद्यालय की कक्षा 1 से 8 में इसी समुदाय के 155 बालक-बालिकाएँ अध्ययनरत हैं एवं मेरे सहित 4 शिक्षक कार्यरत हैं। स्कूल में आने वाले कुल 155 बच्चों में से 78 बच्चे-यानी लगभग 50 प्रतिशत-ऐसे हैं जिनके परिवारों में से कभी भी कोई पढ़ने के लिए स्कूल नहीं गया। वे अपनी पीढ़ी के पहले बच्चे हैं जो स्कूल जा रहे हैं।

इस गाँव में मेरा स्थानान्तरण गत सत्र 2016 में ही हुआ है। इस सत्र में सरकारी अभियानों में मेरी ड्यूटी होने के कारण मैं जुलाई के अन्तिम दिनों में स्कूल पहुँचा। दो-तीन दिनों तक मैं बच्चों से बातें करता रहा-उनके अनुभव सुनता, बच्चे बागड़ी में बोलते, मैं बागड़ी बोलते-बोलते हिन्दी के कुछ शब्द और वाक्य बोल दिया करता। एक दिन बारिश हो रही थी। मैंने

बच्चों के साथ बरसात पर बात शुरू की। मैंने पूछा कि बरसात में क्या होता है– एक बच्चे ने कहा कि बरसात में डेडका आता है। मैंने कहा, "डेडका मतलब मेढक होता है।" इस शब्द का दो-तीन बार अलग-अलग तरह से प्रयोग हुआ। अगले दिन कक्षा में एक मेढक आ गया। मैंने कहा, "देखो बच्चो! मेढक आया है।" अभी कुछ दिनों पूर्व 'बिल्ली के तीन बच्चे' कहानी की बिग बुक दिखाते हुए जब मैंने मेढक पर अंगुली रखकर बच्चों से पूछा कि यह क्या है? तो बच्चे जोर से बोले– "मेढक" ये मेरे लिए एक नई बात थी कि बच्चे जिस को अब तक डेडका बोलते थे, उसे अब वे मेढक बोलने लगे। इसी तरह एक दिन कक्षा में चिड़िया आई तो बच्चे बोले, "सर, सकली आवीगी।" मैंने बच्चों से कहा, "सकली को चिड़िया कहते हैं।" दूसरे दिन कक्षा में फिर चिड़िया आई तो बच्चे बोले, "सर, चिड़िया आवीगी।" इस तरह, कभी चित्र दिखा कर तो कभी वास्तविक चीजें दिखा कर उन वस्तुओं के नाम बागड़ी से हिन्दी में बताने का क्रम चलता रहा। यह ध्यान रखा कि एक सप्ताह में दो या तीन चीज़ों के ही नाम बागड़ी से हिन्दी में बताए जाएँ। इस तरह, बच्चे कुछ शब्द हिन्दी में बोलते और कुछ शब्द व वाक्य बागड़ी में।

इसके अलावा बच्चों में एक दूसरा परिवर्तन देखा, जो मेरे लिये विस्मयकारी था। मैं बच्चों के साथ काफी बातें हिन्दी में करता; बच्चों ने क्रिया शब्दों को पकड़ना प्रारम्भ किया और अपनी आम बोलचाल में उसका प्रयोग भी शुरू किया। मैं कक्षा में रोज़ाना बच्चों से पूछता, "आज कौन-कौन नहा कर आया है?" बच्चे बोलते, "सर, मू जीली न आवियु हूँ।" धीरे-धीरे बच्चे बोलने लगे, "सर, मैं नहा कर आया हूँ।" इसी तरह, मैं मध्याह्न भोजन के समय बच्चों से कहता, "चलो खाना खा लो।" धीरे-धीरे होता यह गया कि बच्चे 'रोटा खावु है' को 'रोटी खानी है' बोलने लगे। बच्चों का क्रिया शब्दों को हिन्दी में बोलना एक सुखद आश्चर्य था। यहाँ समझने वाली बात यह थी कि इसके लिये कोई सायास प्रयास (जैसा मेढक या चिड़िया के लिये किया गया था) नहीं किया गया, जबकि बच्चे मेरे द्वारा बोले जा रहे हिन्दी के वाक्यों की संरचना के पैटर्न को पकड़ते हुए क्रिया शब्दों में हेरफेर कर हिन्दी की वाक्य संरचना करना सीख रहे थे।

इस तरह, बच्चों से लगातार बागड़ी मिश्रित हिन्दी में बात करने का परिणाम यह निकला कि आज तीन महीने बाद अधिकांश बच्चे हिन्दी समझते हैं और बोलते भी हैं।

बच्चों को हिन्दी तक ले जाने के इस प्रयास और अनौपचारिक बातचीत का एक और आश्चर्यजनक परिणाम दिखा–एक दिन मैं पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के साथ बात कर रहा था। उन्हें एक कविता सुनाने के बाद मैंने उनके नाम पूछे। उस वक्त मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा जब पहली कक्षा के एक नए बच्चे, महावीर, ने मेरे पास आकर दूसरे बच्चे की शिकायत करते हुए मेरा नाम लेकर कहा, "विजय लाल जी, आ नी मानतोए।" कई दिन तक अन्य बच्चे भी मेरा नाम लेकर मुझसे बात करते रहे और मैंने भी प्रयास नहीं किया कि बच्चे मुझे 'सर' या 'मास्टरजी' बोलें। बच्चों का यह व्यवहार मुझे थोड़ा अटपटा लगा। लेकिन मैंने महसूस किया कि जो बच्चे बेझिझक कक्षा में मेरा नाम ले रहे थे उनके साथ भाषा पर कार्य करना ज्यादा आसान लग रहा था जबकि जो बच्चे अभी भी संकोच कर रहे थे उनकी कठिनाइयों को मैं नहीं समझ पा रहा था। यहाँ मेरे मन में एक प्रश्न उठा कि बच्चों को अपने शिक्षक को 'सर जी' या 'माट सा' कह कर क्यों सम्बोधित करना चाहिए? क्या यह सम्बोधन बच्चों और शिक्षक के बीच अन्तर पैदा करने का पहला आधार न होता होगा? खैर, धीरे-धीरे अब सारे बच्चे मुझे 'सर' कह कर सम्बोधित करते हैं। लेकिन नाम लेकर सम्बोधित करने से 'सर' तक के सफर ने उन्हें मेरे प्रति विश्वास से भर दिया है। कक्षा में सीखने-सिखाने की प्रक्रिया पर इसके सकारात्मक असर दिख रहे हैं।

अपना नाम बताना

अपने अध्ययन और प्रशिक्षणों के दौरान मैंने लोगोग्राफिक पठन के बारे में पढ़ा, यानी शब्द की आकृति को चित्र की तरह पढ़ना। उस

समय मैं इस प्रक्रिया को ठीक से समझ नहीं पाया था। मैंने कक्षा में इस पर काम करने की योजना बनाई। कक्षा एक में बच्चों से कहा कि एक खेल खेलेंगे, सब बच्चे एक-एक कर अपना नाम बताएँगे और मैं उन्हें लिखूँगा। बच्चे एक-एक कर अपना नाम बताते गए; मैं उन्हें श्यामपट्ट पर बोल-बोल कर लिखता गया और एक बार नाम लिख कर उसके एक-एक वर्ण को बुलवाता गया। जैसे मनीष ने खड़े होकर अपना नाम बताया तो मैंने नाम लिखकर बुलवाया, "म-नी-ष"। इसके बाद उस बच्चे के नाम की ताली बजती। जब सारे बच्चों ने अपने नाम बता दिए तो मैंने प्रत्येक बच्चे से पूछा कि उसका नाम कहाँ लिखा है मुझे बहुत आश्चर्य हुआ जब उपस्थित 21 बच्चों में से 17 बच्चों ने श्यामपट्ट पर बता दिया कि उनका नाम कहाँ लिखा है। इसके बाद इन नामों को शीट पर लिखकर कक्षा-कक्ष में चिपका दिया गया। हम धीरे-धीरे इस प्रक्रिया को आगे बढ़ाते गए। आज बच्चे बता देते हैं कि उनके और उनके दोस्तों के नाम शीट में कहाँ लिखे हुए हैं। इस प्रक्रिया का एक और परिणाम दिखा, बच्चे कार्डशीट पर लिखे नामों की नकल कर अपनी कॉपियों पर उतारने भी लगे हैं। हालाँकि अभी बच्चे पूरी तरह से अपने नामों में प्रयुक्त हो रहे वर्णों और ध्वनियों को पहचान तो नहीं पा रहे हैं, लेकिन किसी चित्र की भाँति नाम लिख कर खुश ज़रूर हो रहे हैं।

बच्चों ने बताए खेतों में लगने वाली 43 चीज़ों के नाम

बच्चों के साथ उनके परिवेश के बारे अनौपचारिक बातचीत अब मेरी शिक्षण पद्धति का एक अभिन्न हिस्सा बन गया है। पहली और दूसरी कक्षा में शिक्षण की शुरुआत ऐसी ही किसी चर्चा से होती है। इस चर्चा में बच्चे अधिकांशतः अपने दैनिक जीवन और आस पास की घटनाओं के बारे में बातचीत करते हैं। यह चर्चा उनको विषय के साथ जोड़ने में मदद तो करती ही है, साथ ही साथ बागड़ी भाषा के तमाम शब्दों को सीखने में हमें भी मदद मिलती है और यहीं से हिन्दी तक ले जाने की प्रक्रिया की शुरुआत भी होती है। ऐसे ही एक दिन कक्षा 1 व 2 की सामूहिक कक्षा में बच्चों से बातचीत के दौरान एक बच्चे ने बताया कि कल उसके यहाँ 'वाडी' थी, यानी मक्के की फसल पकने के बाद उसे देवताओं को अर्पण करने वाली पूजा। वाडी की बात चल रही थी तो मैंने बच्चों से पूछा कि खेतों में और कौन-कौन सी चीजें होती हैं। बच्चे बताते गए और मैं उन सारी चीज़ों के नाम श्यामपट्ट पर लिखता गया। बच्चों ने 43 तरह की चीज़ों के नाम बताए; इन में नारियल और नीलगर जैसे पेड़ों के नाम भी थे जो इस क्षेत्र में नहीं उगते हैं। जब मैंने बच्चों से यह जानने का प्रयास किया कि नारियल और नीलगर के पेड़ कैसे होते हैं और उन्होंने इन्हें कहाँ देखा है, तो एक बच्चे ने कक्षा में लटकाई हुई कहानियों की किताबों में से एक किताब निकालकर मुझे थमा दी। खैर, जब मैंने बच्चों द्वारा बताई हुई चीज़ों की सूची पर नज़र डाली तो पता चला कि बहुत सारी चीज़ें ऐसी हैं जिनका नाम बच्चों ने अपनी स्थानीय भाषा (बागड़ी) में बताया है। कई चीज़ों के नाम हिन्दी में भी थे। बातचीत के दौरान ही बच्चों को उन वस्तुओं के हिन्दी और अंग्रेजी नामों से भी परिचित कराया गया तथा बच्चों की मदद से ही इसका एक चार्ट बनाकर कक्षा-कक्ष में लगा दिया गया। मुझे अब बार-बार महसूस होने लगा है कि कक्षा-कक्ष में चुप्पी की संस्कृति को छोड़ कर बच्चों से बात करना आवश्यक है। बात करने से एक तो बच्चे अपने अनुभवों से नए ज्ञान को जोड़ कर सीखते हैं, दूसरे वे घर की भाषा से मानक भाषा की ओर अग्रसर होते हैं। हम अक्सर यह मानते हैं कि बच्चे ज़्यादा कुछ नहीं जानते हैं। बच्चों से यदि बातें की जाए और उनकी बातों को तवज्जो दी जाए तो वे बहुत सारी जानकारियाँ साझा करते हैं।

अर्थ निर्माण

पाठों में आए नये/कठिन शब्दों के अर्थ बताने के बाद यह मान लिया जाता है कि बच्चों को

इन नए शब्दों की जानकारी हो चुकी है। परन्तु शब्दों को सन्दर्भ के साथ व बच्चों के रोज़मर्रा के जीवन के साथ जोड़ कर अर्थ बताने के बारे में कहा गया तो अनुभव अलग प्रकार के रहे। बच्चों के साथ कक्षा 3 में 'मीठे बोल' कहानी पर चर्चा हो रही थी, तो दयालु शब्द पर बात करते हुए दया की बात आई और मैंने बच्चों से पूछा कि दया क्या होती है? एक बच्चे ने जो उत्तर दिया वह मेरे लिए आँखें खोल देने वाला था। बच्चे ने कहा, "सर, दया होती है जैसे कि उस दिन आपने हमारे ऊपर दया करके हमको जूते बाँटे थे।" दरअसल, कुछ दिन पूर्व ही एक संस्था द्वारा स्कूल में जूते बाँटे गए थे। उस बच्चे द्वारा दिया गया यह जवाब मेरी आँखें गीली करने वाला था। उसकी बात का मेरे पास कोई ज़वाब नहीं था। मैंने तुरन्त बात बदली और सोचा कि आखिर यह क्यों हुआ, और बच्चे ने इस तरह का ज़वाब क्यों दिया होगा? सरकारी संस्थाओं या अन्य स्रोतों द्वारा गाँव में कभी-कभी कुछ सामान का वितरण किया जाता है। सामान वितरण करने वाली संस्थाएँ या लोग इस तरह का वातावरण बनाते हैं जैसे सामान बाँट कर वे गाँव वालों पर बड़ा उपकार कर रहे हैं। मुझे लगा कि बच्चे ने भी जूते वितरण करने वाली घटना को अपने परिवेश के इन्हीं सन्दर्भों के साथ जोड़ा होगा।

दरअसल, बच्चे जब भी किसी शब्द का अर्थ बनाने की प्रक्रिया में होते हैं तो अपने सन्दर्भों और आसपास की घटनाओं, अनुभवों से तथ्य एकत्र कर रहे होते हैं। इसको इस उदाहरण से भी समझा जा सकता है– एक दिन कक्षा 1 में जैसे ही मैं घुसा, बच्चे बोले, "सर, काले गाम में मोदी जी आए थे।" मुझे आश्चर्य हुआ कि गाँव में मोदी जी कहाँ से आ गए? तभी कक्षा 3 के एक बच्चे ने बताया कि कल गाँव में राजस्थान सरकार के एक मंत्री, जो इसी जिले के रहने वाले थे, सौर ऊर्जा की लिफ्ट का उद्‌घाटन करने आए थे। मुझे लगा बच्चों से इस पर बात करनी चाहिए। मैंने बच्चों से पूछा कि और क्या हुआ? बच्चों ने बहुत सारी बातें बताई। सात गाड़ियाँ आईं थीं, पुलिस वाले आए थे, माला पहनाई थी। तभी एक बच्चा बोला, "सर, एक करोड़ लोग आए थे।" बच्चे के जवाब को यदि ध्यान से देखें तो पाएँगे कि एक करोड़ किसी मात्रा का बोध नहीं कराता है, बल्कि बच्चे के लिए बहुत अधिक संख्या का बोध कराता है। बच्चों द्वारा किसी भी शब्द के अर्थ ग्रहण करने की प्रक्रिया में यह जरूरी नहीं है कि वे शिक्षक द्वारा बताए गए/शिक्षक द्वारा समझे गए अर्थ को ही ग्रहण करे। बच्चे अपने आसपास की घटनाओं के बारे में अपनी एक राय कायम करते हैं; इन सब घटनाओं के बारे में बात न करने पर उनकी वही राय मज़बूत होती जाती है और यह अर्थ ग्रहण करने की प्रक्रिया में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

भाषा शिक्षण के दौरान अपनाई गई इन गतिविधियों ने बच्चों और मेरे स्वयं के लिए सीखने-सिखाने को अत्यन्त ही रोचक बना दिया है। मैं बच्चों को काफी हद तक बागड़ी से हिन्दी तक लाने में सफल हुआ हूँ, प्रयास अभी भी जारी हैं।

विजय प्रकाश जैन विगत एक दशक से हिन्दी भाषा शिक्षण के क्षेत्र में सक्रिय हैं। वर्तमान में राजस्थान के बाँसवाड़ा जिले में मेंदिया डिण्डोर के राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में प्रबोधक हैं। सम्पर्कः vijaypjain1970@gmail.com